संत ने खोल कर रखे ब्रह्माकुमारीज़ के सारे राज़

ब्रह्मा जी के कर्त्तव्य को जानें...

एक अद्भुत रहस्य जो हमने सुना तो है लेकिन उस समय काल से सम्बन्धित घटना को सही रूप में जाना नहीं। कहते हैं कि ब्रह्मा ने सृष्टि रची, परमात्मा शिव के निर्देशन में। मैंने स्वयं इनके मुख्यालय में जाकर देखा है कि कैसे ब्रह्मा(दादा लेखराज) ने छोटी-छोटी बालिकाओं को तपस्वी बनाकर आने वाली स्वर्णिम दुनिया के योग्य बनाया। ये मैंने अपने अन्तर्मन से जाना और समझा कि ब्रह्मा जी का रहस्य क्या है। प्रस्तुत है - उनसे पूछे गए सवाल पर उन्हीं की राय, उन्हीं के ही शब्दों में।

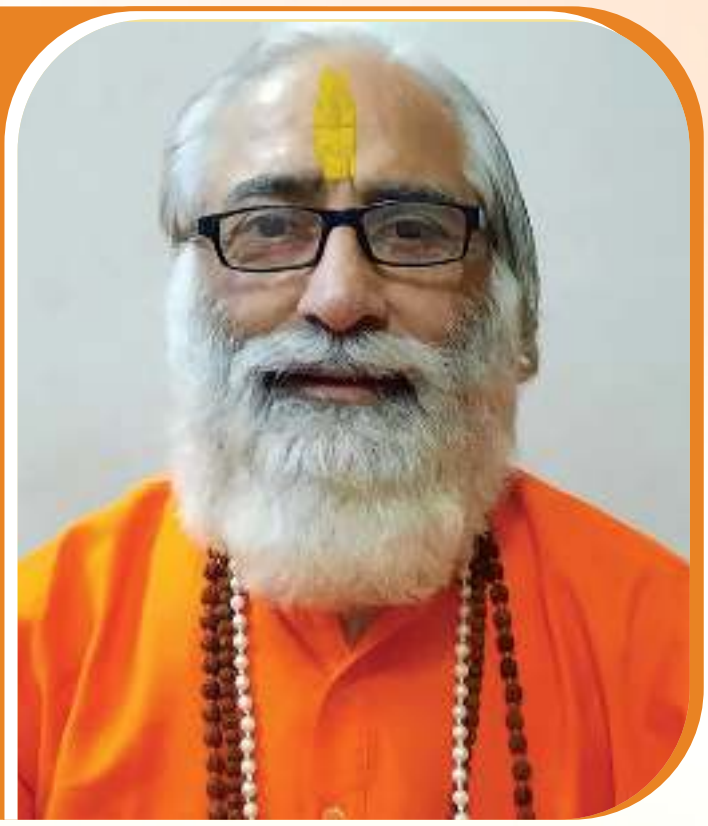

रिपोर्टर : यहां पर दादा लेखराज कृपलानी को प्रजापिता ब्रह्मा कहा गया है। क्या वो ब्रह्मा है?

संतः ब्रह्मा, अब यहां भी एक थोड़ा-सा जो समझ का फेर है वो बताते हैं आपको। अब देखिए भगवान शिव एक हैं, पूरी सृष्टि के रचयिता हैं। उनके आगे तीन भाग कर दिए गए, क्या- ब्रह्मा, विष्णु और शंकर। आप देखेंगे कि ब्रह्मा भी किसी की तपस्या में लीन है। साथ ही साथ देखिए विष्णु भी किसी ना किसी की तपस्या में लीन है। चाहे वह राम का रूप ले-ले या कृष्ण का रूप ले-ले, भगवान शिव का तप तो वो भी कर रहे हैं। उनकी पूजा कर रहे हैं और अगर आप शंकर को देख रहे तो शंकर भी त्रिशूल हाथ में लिए हुए और बैठे हैं ध्यान में किसी के। तो तीनों किसके ध्यान में बैठे हैं? वो शिव के ध्यान में बैठे हैं। जो सृष्टिकर्ता भी है। उसने अपने कार्य को तीन भागों में बांट दिया। और तीनों को कह दिया कि तुम सृष्टि को बनाओ... ठीक है व प्रजापिता ब्रह्मा कहला गए, पालने वाले विष्णु हुए और संहार कर्त्ता शंकर हो गए। अब आपने पूछा कि इन महाराज ने यानी कि दादा लेखराज कृपलानी जी ने अपने आपको प्रजापिता ब्रह्मा घोषित किया,नहीं। इन्होंने नहीं किया...ना।

यह पुरानी बात है, सन् 1936 में इन्होंने देखा बड़े ध्यान में जब चले गए, बेचैनी हुई और उस ध्यान में इन्होंने प्रलय को देखा। प्रलय में बम फट रहे हैं, लोग आपस में लड़ रहे हैं, मारकाट मची हुई है। यानी कलियुग का इन्होंने आगे आने वाला समय देखा। भाई-भाई को मार रहा है। रिश्ते तार-तार होते चले जा रहे हैं। आयु लोगों की बहुत कम हो गई है यानी सृष्टि का विनाश उन्होंने अपनी खुली आंखों से देखा। कोई गरीब तो थे नहीं, बचपन से ही हीरों के बड़े पारखी थे, हीरों के व्यापारी थे। कलकत्ता तक इनका व्यापार था। उस समय कराची सिंध प्रांत जो आज पाकिस्तान में है वहां ये पैदा हुए थे। 1876 में पैदा हुए थे। 1936 में इनको प्रलय का साक्षात्कार हुआ और वहीं पर साथ ही साथ जब एक बहुत गहन अंधकार होता है, तो एक सूर्योदय की किरण जब निकलती है तभी निकलती है, गहन अंधकार की बात है। भीतर इनके एक साक्षात्कार हुआ... किसका? भगवान शिव का साक्षात्कार किया इन्होंने। शिव ने इन्हें प्रेरणा दी कि बेटा उठ, कुछ कर। नई सृष्टि का सृजन कर। तो इन्होंने अपने साथ नारी शक्ति को लिया। नारी भी क्या छोटी-छोटी बालिकाएं इनके साथ। और क्या बनाया इन्होंने ओम मंडली। ये पहले प्रजापिता ब्रह्माकुमारी नाम नहीं था, पहले ओम मंडली नाम था। ओम का उच्चारण करना, शिव का उच्चारण करना, भजन करना, कीर्तन करना यही इनका कार्य था। और इन्होंने कहा कि चरित्र जो श्रीराम का चरित्र था, जो श्रीकृष्ण का चरित्र था वो वाला चरित्र सब अपनाएंगे। वही गुण अपनाएंगे और इन्होंने एक-एक गुण स-चरित्रता, आचरण शुद्ध होना चाहिए, सभी से प्रेम करना चाहिए, मीठी वाणी बोलनी चाहिए। बस, यह करते-करते, एक-एक गुण डालते-डालते क्योंकि बच्चों में गुण चले जाते हैं। फिर इन्होंने सोचा कि क्या किया जाए इसके बाद? ये छोटी-सी मंडली है, इस मंडली को बड़ा रूप देना है। तो इन्होंने सारा व्यापार अपना कलकत्ता में अपने पार्टनर पर छोड़ दिया। आ गए लौट के, भारत का पार्टीशन हो गया, हिंदुस्तान पाकिस्तान बन गया। अब भारतवर्ष में उन्होंने 1950 में वहां से कुछ बालिकाएं साथ में आई। जिन्हें आज लोग दादियों के नाम से जानते हैं। वो साथ में आ गई, पैसा था उनके पास। क्योंकि हीरों के व्यापारी थे, गरीब नहीं थे। उन्होंने माउण्ट आबू में आके जो आज यहां पर इनका समझिये कि अंतर्राष्ट्रीय हेड क्वार्टर बन चुका है। वहां पर माउण्ट आबू में इन्होंने स्थान लिया और वहीं पे एक विश्व विद्यालय की स्थापना की। - क्रमशः

दिल्ली-राजौरी गार्डन। वर्ल्ड पॉपुलेशन दिवस के उपलक्ष्य में आचार्य भिक्षु हॉस्पिटल में आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ को 'तनाव प्रबंधन' विषय पर वर्कशॉप कराने के लिए आमंत्रित किया गया। इस दौरान ब्रह्माकुमारीज़ राजौरी गार्डन सबज़ोन संचालिका ब्र.कु. शक्ति दीदी, कीर्ति नगर सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. शिल्पा बहन, मोती नगर सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. तनु बहन, ब्र.कु. डॉ. ललिता बहन, सिस्टर कुसुम, हॉस्पिटल के मेडिकल सुपरिंटेंडेंट कुलभूषण गोयल, डॉ. प्रसाद, डॉ. सुषमा,एचओडी ओबीजीवायएन तथा अन्य सभी डॉक्टर्स व नर्सिंग स्टाफ शामिल रहे।

उदयपुर-राज.। विद्यालय में कार्यक्रम के दौरान सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. रमेश भाई। मंचासीन हैं बायें से ब्र.कु. रश्मि बहन, डायरेक्टर संदीप सिंगटवाडिया, स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. रीटा दीदी व ब्र.कु. वैशाली बहन।

हाथरस-उ.प्र.। पुलिस लाइन के मनोरंजन हॉल में 'तनाव प्रबंधन' विषय पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में मेमोरी ट्रेनर प्रो. डॉ. ई.वी. स्वामीनाथन, अग्निशमन अधिकारी राजकुमार वाजपेई, आर.आई. राजकुमार सिंह, उपनिरीक्षक राजकुमार यादव, उपनिरीक्षक सुशील, हेड कॉन्स्टेबल पुष्पेन्द्र सिंह, हे.कॉ. हरिशंकर, हे.कॉ. उदयभान सिंह, एफ.एस.ओ., अन्य पुलिसकर्मी एवं अधिकारियों सहित जीतू पहलवान, गजेन्द्र भाई, मनोज भाई, ब्र.कु. कोमल, ब्र.कु. दिनेश आदि उपस्थित रहे।

उरई-उ.प्र.। शिक्षा विभाग के जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी चंद्र प्रकाश को ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय माउण्ट आबू में होने वाले टीचर्स कॉन्फ्रेंस का निमंत्रण देते हुए स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. मीना दीदी। साथ हैं ब्र.कु. बृजभान भाई व ब्र.कु. सरिता बहन।

पटना-बुद्धा कॉलोनी(बिहार)। हड्डी, जोड़ एवं नस रोग विशेषज्ञ डॉ. रमाकांत कुमार के साथ ज्ञानचर्चा के पश्चात् उन्हें ओमशान्ति मीडिया पत्रिका व प्रसाद देते हुए ब्र.कु. मृदुल बहन।

अबोहर-पंजाब। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की प्रथम मुख्य प्रशासिका जगदम्बा सरस्वती(मम्मा) के 59वें पुण्य स्मृति दिवस पर श्रद्धासुमन अर्पित करने के पश्चात् उपस्थित हैं नगर निगम मेयर विमल ठठई, सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. पुष्पलता बहन, राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. सुनीता बहन, लेखक परिषद के प्रधान राज सदोष जी तथा अन्य भाई-बहनें।